खनिज उत्पादन की विशिष्टियॉ
अप्रैल 2013 से मार्च 2014

(क) सामान्य :

वित्तीय वर्ष 2013–14 के दौरान देश में खनिज उत्पादन का कुल मूल्य (परमाणु तथा गौण खनिजों को छोड़कर) रू 225660 करोड़ था, जो गत वर्ष की तुलना में 3.28% की सीमांत कमी दर्शाता है। यह मुख्यतः लिग्नाईट, प्राकृतिक गैस (उपभुक्त), पेट्रोलियम (अपरिष्कृत), स्वर्ण, रजत, टिन सांद्र, अगेट, बेराईटस, डोलोमाइट, फेल्स्पार, अग्नि मिटटी, चूनापत्थर, लाईमकंकर, लाईमशैल, मैग्नेसाइट, फास्फोराइट, पायरॉक्सिनाइट इत्यादि के उत्पादन में कमी के और साथ ही कोयला तथा लोह अयस्क के ईकाई मूल्य में कमी के कारण है । वर्ष 2013–14 के दौरान कोयला, बॉक्साइट, क्रोमाइट, ताम्र सांद्र, लोह अयस्क, सीसा सांद्र, मैंगनीज अयस्क, ऐपेटाइट, बाल क्ले, कैल्साइट, हीरा, कॅओलिन, कायनाइट, अभ्रक (अपरिष्कृत), क्वार्टज, क्वार्टजाइट, वर्मीक्यूलाइट, वोलैस्टोनाईट इत्यादि जैसे कुछ खनिजों के उत्पादन में वृध्दि हुई है।

(ख) खनिज उत्पादन का सूचकांक :

वर्ष 2013–14 के लिये खनिज उत्पादन का सूचकांक (आधार वर्ष 2004–05 = 100) 124.7 था। यह गत वर्ष 2012–13 पर 0.6% की सीमांत कमी दर्शाता है जो लिग्नाईट, प्राकृतिक गैस (उपभुक्त), पेट्रोलियम (अपरिष्कृत), स्वर्ण, टिन सांद्र, जस्त सांद्र, डोलोमाइट, चूनापत्थर, फास्फोराइट, स्टिएटाइट इत्यादि के उत्पादन में कमी होने के कारण है। चालू वर्ष में खनिज उत्पादन के सूचकांक ने ईंधन खनिजों में करीब 1.7% कमी दर्शाई है । तथापि वर्ष 2013–14 में गत वर्ष की तुलना में धात्विक खनिजों में 8.8% एव अ–धात्विक खनिजों में 2.3% की सकारात्मक वृध्दि परिलक्षित हुई।

(ग) संसूचक खानें :

रिपोर्ट करने वाली खान का आशय एक ऐसी खान से है, जो खनिज संरक्षण और विकास नियमावली की विवरणी के अनुसार वर्ष के दौरान उत्पादन को सूचित करने वाली खान या शून्य उत्पादन सूचित करनेवाली, किंतु ऐसी स्थिति में उपरिभार हटाने, भूगतवेधन, विझिंग, निमडजन फार्म गर्तन द्वारा गवेषण, खाई खोदना या वेधन जैसे विकास कार्य में व्यस्त खान हो।

वर्ष 2013–14 के दौरान संसूचित खानों की संख्या (परमाणु तथा गौण खनिजों को छोड़कर) गत वर्ष में 3978 की तुलना में घटकर 3722 हो गई। ईंधन समूह के खनिजों में खानों की संख्या पेट्रोलियम (अपरिष्कृत) तथा प्राकृतिक गैस को छोडकर, 575 थी। धात्विक समूह के खनिजों में खानों की संख्या 663 और अ–धात्विक समूह के खनिजों के मामले में यह 2484 थी। वर्ष 2013–14 में खानों की कुल संख्या में से प्रमुख राज्यों में आंध्र प्रदेश का हिस्सा 661 जितना या 17.8%, राजस्थान 557 या 15.0%, गुजरात 464 या 12.5%, मध्य प्रदेश 364 या 9.8%, तमिलनाडु 354 या 9.5%, झारखंड 257 या 6.9%, छत्तीसगढ़ 202 या 5.4%, कर्नाटक 187 या 5.0%, ओडिशा 180 या 4.8%, महाराष्ट्र 163 या 4.4% तथा पश्चिम बंगाल 122 या 3.3% रहा। शेष राज्य तथा केंद्रशासित प्रदेशों ने बाकी बची 211 या 5.6% खानें दर्शायी है।

(घ) राज्यवार विश्लेषण :

वर्ष 2013–14 के दौरान राज्यवार परिदृश्य के संदभ में, खनिज उत्पादन का मूल्य (परमाणु तथा गौण खनिजों को छोड़कर) आफ–शोर क्षेत्र से सर्वाधिक 54435 करोड़ रूपये या कुल मूल्य का 24.1%, रहा। महत्वानुक्रम में इसके पीछे राजस्थान रू. 24714 करोड़ अथवा 11.0%, ओडिशा रू. 22932 करोड़ या 10.2%, झारखंड रू. 20645 करोड़ या 9.1%, छत्तीसगढ रू. 19566 करोड़ या 8.7%, गुजरात रू. 12389 करोड़ या 5.5%, आंध्र प्रदेश रू. 11867 करोड या 5.3%, पश्चिम बंगाल रू. 11751 करोड़ या 5.2%, असम रू. 11153 या 4.9%, मध्य प्रदेश रू. 11077 करोड़ या 4.9%, महाराष्ट्र रू. 6899 करोड़ या 3.1%, तमिलनाडु रू. 6075 करोड़ या 2.7%, कर्नाटक रू. 5742 करोड़ या 2.5% तथा उत्तर प्रदेश रू. 3234 करोड़ या 1.4% रह। खनिज उत्पादन के कुल मूल्य का शेष करीब 3179 करोड़ या 1.4% हिस्सा अन्य राज्यों केंद्रशासित प्रदेशों का रहा।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान राज्यों में से छत्तीसगढ, हरियाणा, जम्मू व काश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल में खनिज उत्पादन के मूल्य में बढोतरी दर्ज की गई। जबकि आंध्र प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, बिहार, गोवा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, केरल, महाराष्ट्र, मेघालय, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और आफ–शोर क्षेत्र में खनिज उत्पादन के मूल्य मे गिरावट दर्ज की गई।

(ङ) खनिजवार विश्लेषण :

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान मूल्य के संदर्भ में, खनिज उत्पादन के कुल मूल्य में सर्वाधिक योगदान रू. 73523 करोड़ या लगभग 32.6% कोयल का था। उसके बाद पेट्रोलियम (अपरिष्कृत) रू. 68664 करोड़ या 30.4%, लोह अयस्क रू. 32031 करोड़ या करीब 14.2%, प्राकृतिक गैस (उपभुक्त) रू. 28459 करोड़ या 12.6%, लिग्नाइट रू. 5435 करोड़ या 2.4%, चूना पत्थर रू. 4690 करोड़ या 2.1% तथा जस्त सान्द्र रू. 2742 करोड़ या 1.2% का क्रम रहा। वर्ष 2013–14 के दौरान खनिज उत्पादन के कुल मूल्य में इन सात खनिजों का सम्मिलित अशदान 95. 5% रहा।

खनिज उत्पादन के कुल मूल्य में (परमाणु एवं गौण खनिजों को छोडकर) ईंधन खनिजों का योगदान 78% था। शेष 22% योगदान खनिज संरक्षण एवं विकास नियमावली के अंतर्गत आने वाले खनिजों का है जिसमें धात्विक (18.9%) तथा अधात्विक खनिज (3.1%) निहित हैं। खनिज संरक्षण एवं विकास नियमावली, 1988 की परिधि में आनेवाले कुछ महत्वपूर्ण खनिजों के उत्पादन रूझान की संक्षिप्त समीक्षा निम्नवत् हैः

धात्विक खनिजः

बाक्साइटः वर्ष 2013–14 के दौरान बाक्साइट का उत्पादन गत वर्ष की तुलना में 30% वृध्दि दर्ज कराते हए 21666 हजार टन रहा। कुल उत्पादन में 35% योगदान के साथ ओडिशा बाक्साईट का अग्रणी उत्पादक रहा। इसके पश्चात गुजरात (32%), झारखंड (11%), महाराष्ट्र (10%), छत्तीसगढ (6%), मध्य प्रदेश (3%), गोवा (2%) का स्थान रहा। शेष 1% योगदान कर्नाटक और तमिलनाडु द्वारा किया गया।

नाल्को,हिंडालको, बाम्बे मिनरल्स, प्रभुदास विठलदास तथा उत्कल अल्यूमिना इण्डसट्रियल लि0 देश में बाक्साइट के खनन में शामिल प्रमुख कंपनियां है। वर्ष 2013–14 के दौरान 25 खानों के साथ कुल उत्पादन में इन कंपनियों का हिस्सा का 69% था। कुल उत्पादन में नाल्को की पंचपटमाली बाक्साइट खान का योगदान 29% था। कुल उत्पादन में सार्वजनिक क्षेत्र का योगदान लगभग 31% रहा। वर्ष के दौरान बाक्साइट की 163 संसूचित खानें थी, जिसमें से 20 खानें सार्वजनिक क्षेत्र तथा 143 खानें निजी क्षेत्र के स्वामित्व में थी।

क्रोमाइटः वर्ष 2013–14 में क्रोमाइट का उत्पादन 2853 टन था, जो गत वर्ष की तुलना में करोब 1% बढ़ गया। कुल उत्पादन में 99.96% के साथ ओडिशा क्रोमाइट का अग्रणी उत्पादक बना रहा। शेष उत्पादन की सूचना कर्नाटक और महाराष्ट्र से प्राप्त हुई। वर्ष 2013–14 के दौरान गत वर्ष में 25 खानों की तुलना में 26 संसूचित खान थीं।

क्रोमाइट खनन में प्रायः 6 प्रमुख उत्पादकों नामतः टाटा स्टील, ओ एम सी, ईम्फेल, फॅकर, बालासोर एलॉयस लि. तथा जिंदल स्टेनलेस लिमिटेड का वर्चस्व बना रहा। क्रोमाइट के कुल उत्पादन में इन कंपनियों का योगदान 95% था। सार्वजनिक क्षेत्र की तीन बड़ी कंपनियों नामतः ओ एम सी, एम एम एल तथा आय डी सी ओ एल ने, जिनके पास 4 खानें है, मिलकर कुल उत्पादन का 24% का योगदान दिया । शेष 76% योगदान निजी क्षेत्र की खानों द्वारा किया गया। निजी क्षेत्र में टाटा स्टील, ईम्फेल एवं फेकर जिनके अपने संयंत्र ओर 6 खानें हैं, ने कुल मात्रा का 61% उत्पादन किया।

ताम्र अयस्क तथा सान्द्रः वर्ष 2013–14 में ताम्र अयस्क का उत्पादन 3778 हजार टन रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 4% बढ़ गया। वर्ष 2013–14 के दौरान ताम्र अयस्क की 5 संसूचित खानें थी। भारत में हिन्दुस्तान कॉपर लि. ताम्र अयस्क एवं ताम्र सान्द्र का एकमात्र उत्पादक था। वर्ष 2013–14 में ताम्र अयस्क में औसत धातु निहितांश 0.90% था।

वर्ष 2013–14 में 139 हजार टन पर ताम्र सान्द्र के उत्पादन में पिछले वर्ष की तुलना में 13% की वृध्दि दर्ज की गई । समीक्षाधीन अवधि के दौरान ताम्र सान्द्र में औसत धातु निहितांश 23.11% था।

स्वर्णः हटटी गोल्ड माइंस क. लि. भारत में प्राथमिक स्वर्ण की प्रमुख उत्पादक थी। इसका कुल उत्पादन में 99. 5% हिस्सा था जबकि शेष उत्पादन मनमोहन मिनरल इंडस्ट्री प्रा.लि. द्वारा संसूचित किया गया । एच0 जी0 एम0 एल0 के स्वामित्व वालो खानों में विकास कार्यों पर ज्यादा ध्यान दिए जाने के कारण वर्ष 2013–14 में स्वर्ण अयस्क का उत्पादन 421 हजार टन रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 16% कम था। चालू वर्ष में पिछले वर्ष की तुलना में स्वर्ण सिल्लियों की प्राप्ति में भी 2% की कमी हो गई। वर्ष 2013–14 में प्राथमिक स्वर्ण का उत्पादन

1564 किलोग्राम था। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान स्वर्ण का उत्पादन संसूचित करने वाली 4 खानें थी। तोन खानें कर्नाटक में और एक झारखंड में स्थित थी।

लौह अयस्क: वर्ष 2013–14 में लंप्स, फाईंस तथा सान्द्र मिलकर लौह अयस्क का कुल उत्पादन 152.43 मिलियन टन रहा जो पिछले वर्ष के 136.62 मिलियन टन की तुलना में 12% अधिक था। पिछले वर्ष की 310 खानों की तुलना में वर्ष 2013–14 में 298 संसूचित खानें थी। इसके अतिरिक्त वर्ष 2013–14 में 16 एसोसिएटेड खानों न भी लौह अयस्क का उत्पादन सूचित किया। माननोय उच्चत्तम न्यायालय के आदेशानुसार खनन क्रियाओं के स्थगन के कारण गोवा से उत्पादन की कोइ सूचना प्राप्त नहीं हुई।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान लोह अयस्क के कुल उत्पादन में 50% योग के साथ ओडिशा शीर्ष उत्पादक था। इसके पश्चात छत्तीसगढ (20%), झारखंड (15%), कनार्टक (12%) रह तथा शेष 3 प्रतिशत उत्पादन आन्ध्र प्रदश, मध्य प्रदश, महाराष्ट तथा राजस्थान से सूचित किया गया।

सार्वजनिक क्षेत्र की खानों न कुल उत्पादन करीब 39% योगदान दिया। जिसमें एनएमडीसी का योगदान 54%, सेल का 42% तथा ओडिशा माइनिंग कारपोरेशन लि. का 4% था। वर्ष 2013–14 के कुल उत्पादन में निजी क्षेत्र का हिस्सा 61% था। इसमें टाटा स्टील लि. ने 20% का योगदान किया। पॉच शीर्ष उत्पादक नामतः एनएमडीसी, सेल, टाटा स्टील, रूंगटा माइंस प्रा. लि. तथा शिराजुदीन एण्ड क0 ने 22 खानों के साथ मिलकर देश में लोह अयस्क के कुल उत्पादन का 60% योगदान किया।

सीसा तथा जस्ता अयस्क और सान्द्र: वर्ष 2013–14 में सीसा तथा जस्ता अयस्क का उत्पादन 9252 हजार टन रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 7% अधिक हुआ। समीक्षाधीन वर्ष में सीसा और जस्ता अयस्क का उत्पादन संसूचित करने वाली 8 खानें थीं। अयस्क में सीसा और जस्ता का औसत धातु निहितांश क्रमशः 1.73% तथा 9. 23% था। वर्ष के दौरान सीसा सान्द्र के उत्पादन में 5% की वृध्दि हुई तथापि जस्ता सान्द्र का उत्पादन लगभग समान रहा । सीसा सान्द्र में औसत धातु निहितांश 56.48% जबकि जस्ता सान्द्र में 51.65% था।

मैंगनीज अयस्क: वर्ष 2013–14 में मैंगनीज अयस्क का उत्पादन 2558 हजार टन रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 11% अधिक था। वर्ष के दौरान मैंगनीज अयस्क का उत्पादन संसूचित करने वाली 153 खानें थी। मॉयल, कुल उत्पादन में 44% योगदान के साथ मैंगनीज अयस्क का सबसे बडा उत्पादक बना रहा। इसके पश्चात टाटा स्टील (13%), ओएम एण्ड एमएल (6%), आरबीएसएसबीपी (6%) तथा एम एल रूंगटा (4%) का क्रम था। पांच प्रमुख उत्पादकों, जिनके पास 29 संसूचित खानें थी, का हिस्सा कुल उत्पादन में करीब 73% था। मैंगनीज अयस्क के खनन एवं विदोहन में सार्वजनिक क्षेत्रों की दो कंपनियां कार्यरत थी तथा कुल उत्पादन में उनका योगदान करीब 44% था।

गैर–धात्विक खनिज :

बेराइटस: वर्ष 2013–14 में बेराइटस का उत्पादन 1137 हजार टन रहा जो श्रमिको, मशीनरी की अनुपलब्धता तथा बाजार में मांग की कमी के कारण पिछले वर्ष की तुलना में 36% कम था। कुल उत्पादन का करीब 94% एकमात्र खान का प्ररिचालन करत हुए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम– आन्ध्र प्रदेश मिनरल डवलपमेंट कार्पो. लि. द्वारा सूचित किया गया। शेष 6% उत्पादन निजी क्षेत्र की 20 खानों से सूचित किया गया। दोनो वर्षों में 21 संसूचित खानें थी।

डोलोमाइट: वर्ष 2013–14 में डोलोमाइट का उत्पादन 7109 हजार टन रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 2% घट गया। पॉच बडे उत्पादकों ने डोलोमाइट का करीब 37% उत्पादन सूचित किया। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि. (सेल) डोलोमाइट का प्रमुख उत्पादक रहा, जिसका कुल उत्पादन में 15% योगदान था। इसके बाद राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (7%), साउथ वेस्ट माइनिंग लि0 (6%), बिसरा स्टोन लाइम कं. लि. (4%) तथा कमर्शियल स्टोन सप्लाई कंपनी (4%) का क्रम रहा।

वर्ष के दौरान 7 सार्वजनिक क्षेत्र की खानों (एक सह उत्पादक खान सहित) नें कुल उत्पादन में करीब 29% का योगदान किया। पिछले वर्ष की 197 खानों की तुलना में वर्ष 2013–14 में 173 संसूचित खानें थी। राज्यों में छत्तीसगढ डोलोमाइट का प्रमुख उत्पादक था जिसने कुल उत्पादन का 37% योगदान किया। इसके बाद आन्ध्र प्रदेश (19%) एवं ओडिशा (9%) का क्रम रहा तथा शेष (35%) योगदान 6 अन्य राज्यों द्वारा किया गया।

जिप्सम: वर्ष 2013–14 के दौरान जिप्सम का उत्पादन 2930 हजार टन रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 18% कम था। राजस्थान इस वर्ष भी उत्पादन में अग्रणी राज्य बना रहा। दोनों वर्षों (2013–14 और 2012–13) में जिप्सम का लगभग संपूर्ण उत्पादन राजस्थान से सूचित किया गया। राजस्थान स्टेट माइनिंग एण्ड मिनरल्स लि. तथा फर्टिलाइजर कारपोरशन ऑफ इंडिया से सम्बद्ध राजस्थान में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र की 32 खानों ने मिलकर उत्पादन का लगभग संपूर्ण (98%) योगदान किया।

कॅओलिन: वर्ष 2013–14 में केओलिन का उत्पादन 4753 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना में 12% अधिक था। पांच प्रमुख उत्पादक हैं–श्री विनोद पी. सोलंकी (22%), इंगलिश इंडियन क्ले लि. (9%), एच. डी. एंटरप्राइजेस (प्रा.) लि. (8%), गोपाल सावा डांगर (6%) एवं सतीश वालजी छागा (4%)। उन्होने कुल उत्पादन का 49% योगदान किया।

केओलिन का शीर्ष उत्पादक राज्य रहते हुए गुजरात ने कुल उत्पादन में 65% योगदान किया । इसके बाद राजस्थान (17%), केरल (15%) एवं पश्चिम बंगाल (2%) का क्रम रहा जबकि शेष 1% योगदान आन्ध्र प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक और मध्य प्रदेश ने मिलकर किया।

पिछले वर्ष की 145 खानों (5 सार्वजनिक क्षेत्र तथा 140 निजी क्षेत्र) की तुलना में वर्ष 2013–14 में 158 (5 सार्वजनिक क्षेत्र तथा 153 निजी क्षेत्र) संसूचित खानें थी। वर्ष 2013–14 में 7 सह–उत्पादक खानों ने भी कॅओलिन उत्पादन सूचित किया। लगभग संपूर्ण उत्पादन निजी क्षेत्र से सूचित किया गया। कुल उत्पादन में प्रक्रमित कॅओलिन का अंश 1% रहा।

चूना पत्थर: वर्ष 2013–14 में चूना पत्थर का उत्पादन में 278.7 मिलियन टन रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 2% कम था । पिछले वर्ष में 778 खानों की तुलना में वर्ष के दौरान 717 संसूचित खानें थीं। भारत में कुल मिलाकर 334 स्वभोगी खानें थी जिनका कुल उत्पादन में योगदान करीब 88% था। वर्ष 2013–14 के दौरान पिछले वर्ष की 24 सार्वजनिक एवं 754 निजी क्षेत्र की खानों की तुलना में 23 सार्वजनिक एवं 694 निजी क्षेत्र की संसूचित खानें थीं। सार्वजनिक क्षेत्र की खानों का उत्पादन में हिस्सा गत वर्ष में 3.9 % की तुलना में 4.2% था।

राज्यवार उत्पादन में आंध्र प्रदेश ने 21% योगदान किया इसके बाद राजस्थान (20%), मध्य प्रदेश (13%), तमिलनाडु (9%), गुजरात, कर्नाटक एवं छत्तीसगढ (8% प्रत्येक) का क्रम रहा तथा शेष (13%) योगदान अन्य राज्यों का रहा। कुल उत्पादन के लगभग 49% की सूचना प्रमुख उत्पादकों नामतः अल्ट्रा टेक सीमेंट लि. (15%), जयप्रकाश एसोसिएटस लिमिटेड(7%),ए सी सी लिमिटेड एवं अंबुजा सीमेंट (6% प्रत्येक), श्री सीमेंट लिमिटेड (5%), द इंडिया सिमेन्ट लिमिटेड (4%), रामको सिमेन्ट लिमिटेड एवं डालमिया सीमेंट (भारत) लिमिटेड (3% प्रत्येक) से सूचित की गई।

फास्फोराइट: वर्ष 2013–14 में फास्फोराइट का उत्पादन 1384 हजार टन रहा जो वर्ष के दौरान दो खानों के अस्थायी बंदी के कारण पिछले वर्ष की तुलना में 29% घट गया। वर्ष के दौरान कुल उत्पादन का करीब 87% योग सार्वजनिक क्षेत्र की खानों द्वारा तथा शेष 13% हिन्दुस्तान झिक लि. की एक खान द्वारा सूचित किया गया। वर्ष 2013–14 के दौरान आरएसएमएमएल, की झामरकोटरा खान का हिस्सा कुल उत्पादन में 77% था। वर्ष 2013–14 के दौरान 3 संसूचित खानें थी जिनमें दो अ–स्वभोगी एवं एक स्वभोगी थीं।

सिलिका बालु: वर्ष 2013–14 के दौरान सिलिका बालू का उत्पादन 3346 हजार टन रहा जो बाजार में मांग की कमी तथा श्रमिको की अनुपलब्धता के कारण पिछले वर्ष की तुलना में करीब 22% से घट गया। वर्ष 2013–14 में पिछले वर्ष की 170 खानों की तुलना में खानों की संख्या 136 थी। उत्पादन का करीब 99% की निजी क्षेत्र की 131 प्रमुख एवं 8 सह–उत्पादक खानों से सूचित किया गया तथा शेष 1% सार्वजनिक क्षेत्र की 5 खानों द्वारा सूचित किया गया।

वर्ष 2013–14 के दौरान आन्ध्र प्रदेश और गुजरात में संयुक्त रूप से कुल उत्पादन का करीब 68% का योगदान किया। वर्ष 2013–14 के दौरान सांघी इंडस्टीज (10%), मोहम्मद शेर खान पठान (9%), भवानी मिनरल्स (6%), डी बालाकृष्ण रेडडी (4%), ईश कृपा मिनरल्स (3%) तथा बूंदी सिलिका सेंड सप्लाय कंपनी (3%) सिलिका बालू के प्रमुख उत्पादक रह थे ।

स्टिएटाइटः वर्ष 2013–14 में स्टिएटाइट का उत्पादन 865 हजार टन था जो पिछले वर्ष की तुलना की तुलना में 11% घट गया। पाच प्रमुख उत्पादकों न स्टिएटाइट के कुल उत्पादन ने करीब 61% का योगदान किया। ये उत्पादक है – एसोसिएटेड सोपस्टोन डिस्ट्रीब्यूशन कं. (प्रा.) लि. (25%), उदयपुर मिनरल्स डवलपमेंट सिंडीकेट (प्रा.) लि. (24%), राजस्थान मिनरल्स एण्ड कं. (5%), रतन लाल डिडवानिया (4%), कटियार माइनिंग एण्ड इंडस्टीयल कारपोरेशन (3%)। वर्ष के दौरान स्टिएटाइट का उत्पादन सूचित करने वाली पिछले वर्ष की 141 प्रमुख एवं 9 सह–उत्पादक खानों की तुलना में 111 प्रमुख एवं 11 सह–उत्पादक खानें थी । स्टिएटाइट का समूचा उत्पादन निजी क्षेत्र से संसूचित किया गया ।

वर्ष 2013–14 में कुल उत्पादन में करीब 83% योगदान के साथ राजस्थान स्टिएटाइट का अग्रणी उत्पादक राज्य था। इसके बाद उत्तराखण्ड (9%) तथा आन्ध्र प्रदेश (7%) का क्रम रहा। स्टिएटाइट का शेष 1% उत्पादन गुजरात, मध्य प्रदेश तथा तमिलनाडु से सूचित किया गया।

*****